International Research Journal of Education and Technology

Peer Reviewed Journal, ISSN 2581-7795

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन

डॉ. सुनील कुमार सिंह

बागजोरावर श्रीनिवास धाम जिगना मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा दर्शन

स्वामी विवेकानंद, एक महान भारतीय व्यक्तित्व हैं जिन्हें रहस्यवादी, दार्शनिक, शिक्षाविद और योगिक संत के रूप में जाना जाता है। उन्हें पश्चिमी जगत में वेदांत और योग के दर्शन को फैलाने में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने 1893 में शिकागो, अमेरिका में आयोजित 'धर्म संसद' में अपने भाषण से भारत को गौरवान्वित किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र का विकास उसके जन-विकास पर निर्भर करता है और शिक्षा की भूमिका को मानव विकास के मार्ग का पूर्णतया अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों की वकालत की जो व्यक्तिगत से लेकर सामाजिक और सार्वभौमिक स्तर तक जाते हैं। उनके द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम भी उनके दर्शन का प्रतिबिंब है, जिसका सीधा संबंध आत्म-विकास, क्षमता निर्माण और सार्वभौमिक विकास से है। उनकी शिक्षण विधियाँ पूरी तरह से पश्चिमी और भारतीय दर्शन पर आधारित हैं। उन्होंने शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए अलग-अलग स्थान निर्धारित किया है। अपने शैक्षिक दर्शन में उन्होंने महिला शिक्षा, शांति शिक्षा और नैतिक एवं मूल्य शिक्षा पर विशेष बल दिया है।

स्वामी विवेकानंद अपने विचारों में आदर्शवादी तथा मानवतावादी है वह मनुष्य की प्रति असाधारण लगाव रखते थे केवल उसी ईश्वर की पूजा करनी चाहिए जो मनुष्य की आत्मा है और मनुष्य की शरीर में विराजमान है यह ठीक है कि प्रत्येक प्राणी एक मंदिर है।

स्वामी जी का विश्वास था कि जान मनुष्य के अंदर आता है मानव केवल उसको खोज निकालता है शिक्षा मनुष्य के अंदर की पूर्णता बाहर निकालती है । स्वामी जी भारत के लिए किस प्रकार की शिक्षा चाहते हैं इस संबंध में उनके निंलिखित शब्द उल्लेखनीय है हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है

स्वामी जी सैद्धांतिक शिक्षा की तुलना में व्यवहारिक शिक्षा पर अधिक बल देते है इन्होंने जन शिक्षा के प्रचार प्रसार में भी बड़ा योगदान दिया है भारतीय शिक्षा को भारतीय स्वरूप प्रदान करने के लिए ये सदैव स्मरण किए जाएंगे ।

शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत या आवश्यक तत्व

1 शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक मानसिक और आत्मिक विकास में योग देना चाहिए ।

2 इस शिक्षा को सच्ची शिक्षा कहा जाना चाहिए जिससे चरित्र का गठन हो ।

3 धार्मिक शिक्षा पुस्तकों से नहीं वरन व्यवहार आचरण और संस्कारो द्वारा दी जानी चाहिए ।

4 शिक्षा गुरु के गृह में रहकर प्राप्त करनी चाहिए और शिक्षक तथा छात्र में महिमा गरिमा और मधुरिमा का संबंध होना चाहिए ।

5 शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा दी जानी चाहिए ।

6 राष्ट्रीय और मानवीय शिक्षा घर से प्रारंभ होनी चाहिए जहां बच्चे अपने संबंधों से प्रेम करना सीखें और बाद में समाज के सदस्य बनकर अपने छोटे से प्रेम को विश्व प्रेम में बदल दें ।

शिक्षा का अर्थ विवेकानंद के अनुसार शिक्षा की व्याख्या शक्ति के विकास के रूप में की जा सकती है शिक्षा मनुष्य की अंत निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है ।

स्वामी जी के अनुसार मानव में कुछ शक्तियां विद्यमान रहती है शिक्षा इसकी इन्हीं शक्तियों का उसमें उपस्थित गुना का विकास करती है पूर्णता बाहर से नहीं आती है वरन मनुष्य के भीतर छिपी रहती है सब प्रकार का ज्ञान मनुष्य की आत्मा में निहित रहता है गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत अपने प्रतिपादन के लिए न्यूटन की खोज की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था वह न्यूटन के मस्तिष्क में पहले से ही विद्यमान था जब समय आया तब न्यूटन ने केवल उसकी खोज की अतः हम मनोवैज्ञानिक शब्दावली में कह सकते हैं "सीखना वास्तव में खोज करना है ।

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में देश प्रेम की भावना का समावेश करना बताया है ।

स्वामी जी का कहना है यदि शिक्षा देश प्रेम की प्रेरणा नहीं देती है तो उसको राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कहा जा सकता है ।

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा के अन्य मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है -

1 मनुष्य में मानव प्रेम समाज सेवा विश्व चेतना और विश्व बंधुत्व के गुना का विकास करना ।

2 मनुष्य को मुक्ति के संबंध में सचेत करना और यह बताना कि उसे अपनी शक्तियों का उपयोग मुक्ति पाने के लिए करना चाहिए ।

3 मनुष्य की आंतरिक एकता को वह जगत में प्रकट करना ताकि वह अपने आपको भली भांति समझ सके ।

4 मनुष्य में आत्म विकास आत्म श्रद्धा आत्म त्याग आत्म नियंत्रण आत्मनिर्भरता आत्मज्ञान आदि अलौकिक सद्गुणों का विकास करन ।

5 मनुष्य का शारीरिक मानसिक भावात्मक धार्मिक नैतिक चारित्रिक सामाजिक और व्यावसायिक विकास करना

शिक्षण विधि

प्रोफेसर लक्ष्मी नारायण गुप्त ने अपनी पुस्तक महान भारतीय शिक्षा शास्त्री में लिखा है शिक्षा की विधि में स्वामी विवेकानंद का अपना एक विशेष स्थान है उनकी शिक्षा विधि एकमात्र आध्यात्मिक कहीं जा सकती है जिसका आधार धर्म है इस विचार से उन्होंने धर्म की विशेष पद्धति को अपनाकर शिक्षा देने के लिए कहा है इस पद्धति की प्रमुख विशेषताएं हैं ।

1 योग विधि द्वारा चित की वृत्तियों का विरोध करना ।

2 व्याख्यान विचार विमर्श उपदेश विधि आदि द्वारा ज्ञान का आयोजन करना ।

3 व्यक्तिगत निर्देशन और परामर्श विधि ।

4 अनुकरण विधि द्वारा शिक्षक के उत्तम चरित्र गुना आदि का अनुकरण करना ।

पाठ्यक्रम

स्वामी जी का कहना है कि दार्शनिक होने का अर्थ यह नहीं है कि जीवन के चरम लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य विषयों के प्रति ध्यान ना दिया जाए । जीवन के चरम लक्ष्य को इसी संसार में निवास करके और इसी शरीर के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है अतः स्वामी जी के पाठ्यक्रम के अंतर्गत उन सब विषयों को स्थान दिया है जिनका संबंध इस संसार से है । इस दृष्टिकोण से अपने देशवासियों के लिए स्वामी जी का परामर्श है हमें अपने ज्ञान के विभिन्न अंगों के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करने की आवश्यकता है जिसे हमारे देश के उद्योगों का विकास हो और मनुष्य नौकरियां नौकरियां खोजने के बजाय अपने स्वयं के लिए पर्याप्त धन का आयोजन कर सके और उसे कुछ बचा सके ।

इस प्रकार स्वामी जी ने उन सभी विषयों के अध्ययन पर बोल दिया है जो मनुष्य की लौकिक समृद्धि और आध्यात्मिक पूर्णता पूर्णता के लिए आवश्यक है लौकिक विषय है भाषा विज्ञान मनोविज्ञान गृह विज्ञान प्राविधिक विषय कृषि व्यवसाय विषय इतिहास भूगोल गणित राजनीति अर्थशास्त्र खेलकूद व्यायाम समाज और राष्ट्र सेवा अध्यात्मिक विषय है धर्म दर्शन पुराण उपदेश श्रवण कीर्तन भजन और संगति ।

शिक्षक का स्थान तथा उसके कर्तव्य स्वामी विवेकानंद का कथन है वास्तव में किसी को किसी के द्वारा कभी शिक्षा नहीं दी गई है हममें से प्रत्येक को अपने आप को शिक्षा देनी पड़ती है वह शिक्षक केवल ऐसे सुझाव देता है जिसे आत्मा कार्य करने और समझने के लिए चैतन्य हो जाती है

स्वामी जी शिक्षकों से यह भी आशा करते थे कि वे मनोविज्ञान की सहायता से बच्चों की कम जनित भिन्नता को समझकर उनके लिए उनके अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था करें और

आत्मज्ञान द्वारा उनकी आध्यात्मिक एकता को समझ कर उन्हें आत्म तत्व का बोध कराने में सहायक हो इस प्रकार स्वामी जी शिक्षक के प्राचीन और अर्वाचीन दोनों स्वरूपों के सार्थक थे

इस रूप में शिक्षक के मुख्य कार्य निम्नलिखित है

1 शिक्षक को बालक को संसार के प्रति उचित दृष्टिकोण का निर्माण करने में सहायता देनी चाहिए ।

2 शिक्षा को पालक के ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में उपस्थित होने वाली सब बढ़ाओ को दूर करना चाहिए ।

3 शिक्षक को यह कभी नहीं समझना चाहिए कि वह बालक को शिक्षा दे रहा है क्योंकि इससे शिक्षा का उद्देश्य पूर्णतया नष्ट हो जाता है ।

4 शिक्षक को बालक के निकट घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना चाहिए।

5 शिक्षक को बालक के प्रति असीम प्रेम अन्य धैर्य और वास्तविक सहानुभूति रखनी चाहिए ।

6 शिक्षक को बालक की प्रवृत्तियों में अपनी पूर्ण शक्ति को आत्मसात कर देना चाहिए ।

शिक्षार्थी -

स्वामी जी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करें इनका विश्वास था कि जब तक शिक्षार्थी इंद्रिय निग्रह नहीं करते उनमें सीखने के लिए प्रबल इच्छा उत्पन्न नहीं होती और वह गुरु में श्रद्धा रखकर सत्य को जानने का प्रयत्न नहीं करते तब तक वे न भौतिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और ना आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं स्वामी जी के अनुसार गुरु शिष्य का संबंध केवल लौकिक ही नहीं होना चाहिए अपित उन्हें एक दूसरे के दिव्य स्वरुप को भी देखना समझना चाहिए ।

विद्यालय -

स्वामी जी गुरु ग्रह प्रणाली के हामी थे परंतु आधुनिक परिपेक्ष में यह जानते थे कि अब गुरु ग्रह जान कोलाहल से दूर कहीं प्रकृति की सुरमय गोद में स्थापित नहीं किया जा

सकते यह केवल इस बात पर बल देते थे कि विद्यालयों का पर्यावरण शुद्ध हो और वहां व्यायाम खेलकूद अध्ययन अध्यापन और इन सब के साथ-साथ समाज सेवा भजन कीर्तन एवं ज्ञान की क्रियाएं भी संपादित हो ।

अनुशासन स्वामी जी के अनुसार अनुशासन का अर्थ है आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना स्वामी जी ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य जन्म से पशु समान होता है अतः उसके जन्मजात अर्थात प्राकृतिक व्यवहार को अनुशासन नहीं कर सकते समाज में रहकर वह सामाजिक आचरण सीखना है और जब यह सामाजिक आचरण आत्म प्रेरित होता है तो उसे हम अनुशासन कहते हैं ।

इस संदर्भ में हमारा निवेदन है कि जब तक मनुष्य आत्म तत्व की अनुभूति नहीं करता तब तक उसके द्वारा निर्दिष्ट होने का प्रश्न नहीं उठता और आत्म तत्व की अनुभूत करने में उसे पूरा जीवन लग सकता है स्पष्ट है कि विद्यालय अनुशासन की बात स्वामी जी नहीं कर पाए विद्यालय अनुशासन का हमारी दृष्टि से यह अर्थ होना चाहिए कि शिक्षक और शिक्षार्थी सभी अपने प्राकृतिक स्वैप पर नियंत्रण कर सके और सामाजिक नियम एवं आदर्श के अनुकूल आचरण करने के लिए अंदर से प्रेरित हो आज इसे स्व अनुशासन कहते हैं ।

शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन -

स्वामी जी जीवन दर्शन के समान उनके शिक्षा दर्शन में भी हमें समन्वयवादी दृष्टिकोण की झलक मिलती है शिक्षा के विभिन्न अंगों के संबंध में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि चिंतन और क्रिया में किसी प्रकार का विरोध नहीं है । दूसरे शब्दों में ज्ञान कर्म और भक्ति का पारस्परिक संबंध है ।

स्वामी जी शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन करना चाहते थे उन्होंने एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षण संस्था स्थापित करने का संकल्प व्यक्त किया था इस पर विदेशी चिंतन तथासंस्कृति का प्रभाव ना हो । छात्र पश्चात ज्ञान विज्ञान को तो सीखे परंतु उनकी सांस्कृतिक चेतना मूलत भारतीय ही रहे हो गया है वे समाज के निम्न स्तर के व्यक्तियों को पहले शिक्षा देने के पक्षधर थे उनकी शिक्षा का मुख्य चांडाल को धीरे-धीरे ब्रह्मांत्व में परिवर्तित करना था उच्च वर्ग की शिक्षा व सदाचार जिस पर कि उनका तेज और गौरव निर्भर है स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन "मनुष्य निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवनदायक" शिक्षा की ओर विकसित हुआ, जो आत्म-साक्षात्कार पर केंद्रित थी। इसमें

समग्र विकास के लिए पश्चिमी विज्ञान और पूर्वी आध्यात्मिकता (वेदांत) का मिश्रण था, और केवल सूचना देने के बजाय आत्मविश्वास, निर्भीकता और विचारों के व्यावहारिक आत्मसात पर जोर दिया गया था, ताकि व्यक्तियों को सशक्त बनाया जा सके और समाज, विशेष रूप से जनसमूह और महिलाओं का उत्थान किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 रमन बिहारी लाल सुनीता शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर लाल बुक डिपो मेरठ

2 पीडी पाठक गुरशरण दास त्यागी शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा

3 डॉ यस यस माथुर उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल पब्लिकेशंस आगरा

4 लाल एवं तोमर शिक्षा की दार्शनिक आधार आर लाल बुक डिपो मेरठ 2014

5 प्रोफेसर रमन बिहारी लाल सुनीता शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार आर लाल बुक डिपो मेरठ

6 जीएमडी त्यागी डाक्टर पीडी पाठक शिक्षा के सिद्धांत अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा 2010

7 डॉ राम सकल पांडे उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल पब्लिकेशंस आगरा 2011